अध्याय–12

राजस्थान की आधुनिक मूर्तिकला

पारम्परिक रूप से राजस्थान मंदिरों की भित्तियों पर सृजित मूर्तियों की उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध है। देलवाड़ा, रणकपुर, नाकोड़ा, जगत शिरोमणि आदि मंदिरों की मूर्तियां इसका उदाहरण है। जयपुर का मूर्ति मोहल्ला किसी परिचय का मोहताज नहीं है। यहाँ के मूर्तिकारों के हाथों में पत्थर मनचाहे आकार में ढलता जाता है। मूर्ति मोहल्ले के मूर्तिकार पूर्णतः व्यावसायिक मूर्तियां बनाते हैं। देवी देवताओं की जीवंत मूर्तियां पूरे विश्व में यहीं से आपूर्ति होती हैं। आजीविका के लिए इन मूर्तिकारों की प्रतिभा व मौलिक सर्जना कहीं दब सी गयी है फिर भी कहीं–कहीं कला के नवांकुर यहाँ भी प्रस्फुटित होते रहे हैं। जिन में से कुछ पेड़ बने तो कुछ शैशवावस्था में ही मूर्झा कर जीवन संघर्ष की धूप में जल गये। पारपंरिक मूर्तिकला के बीच आधुनिकता के स्वर गुंजायमान करने वाले मूर्तिकार राजस्थान में अधिक नहीं हैं। उस्ताद मालीराम शर्मा ने यथार्थवादी मूर्तियों के माध्यम से राजस्थान की मूर्तिकला में नवीन विचार प्रस्तुत किया था। उनकी बनाई मूर्तियां यूरोपीय शास्त्रीय शिल्पों के समकक्ष मानी जाती है। उन्हे राजस्थान का माईकल एंजिलो कहते हैं।मालीराम जी ने राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में मूर्तिकारों की नयी खेप संवारने में महत्ती भूमिका निभाई। बंगाल मूल के तारापदो मित्रा (टी.पी. मित्रा) ने भी स्कूल ऑफ आर्ट्स में कला विद्यार्थियों को मिट्टी से मॉडलिंग का प्रशिक्षण देकर उन्हें पोर्ट्रेट बनाने में दक्ष किया। इनके अनेक शिष्यों ने राजस्थान की आधुनिक मूर्तिकला के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई। कलाविद् गोपीचंद मिश्रा ने पारपंरिक यथार्थवादी तथा महेन्द्र कुमार दास ने व्यक्ति मूर्तन के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में राजस्थानी मूर्तिकारों ने पत्थर के अलावा अन्य माध्यमों पर भी अपने हाथ आजमाये। प्लास्टर, लकड़ी व धातु की मूर्तियां भी आकार लेने लगी। नारायण लाल जैमिनी, अय्याज़ मोहम्मद, आनन्दी लाल वर्मा, बृजमोहन शर्मा, सोहनलाल खत्री आदि ने अपने रचनाकर्म से राजस्थान की मूर्तिकला को समृद्ध किया। 1960–65 के बाद राजस्थान की मूर्तिकला में प्रयोगवाद दिखाई देता है। हरिदत्त गुप्ता के काष्ठशिल्प, ऊषा रानी हूजा के सीमेंट शिल्प उल्लेखनीय है। विविध कला संस्थानों में मूर्तिकला विभागों का संचालन भी नव प्रयोगों व नव सर्जना के लिए मार्गदर्शक बना। ऊषा रानी हूजा, गोपीचन्द मिश्रा, अर्जुन प्रजापति आदि राजस्थान की कला के आधुनिक स्वरूप को गढ़ने वालों में सुपरिचित नाम हैं।

स्व. गोपीचन्द मिश्रा :–

कलाविद् गोपीचन्द मिश्रा राजस्थान की मूर्तिकला को नई दिशा व पहचान दिलाने वाले मूर्तिकार थे। 13 नवम्बर 1907 को इनका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जहाँ संगमरमर पर छैनी–हथोड़े का संगीत गूंजता था। अपने नाना से कला के गुर सीखे और पत्थरों को प्राणवान बनाने में पूरा जीवन लगा दिया। कुछ महीने हरिद्वार में रहकर अपनी प्रतिभा से लोगों को चमत्कृत करने वाले गोपीचन्द जी ने अपनी वास्तविक कर्मस्थली जयपुर को ही बनाया तथा नोका विहार, शिवताण्डव आदि गतिपूर्ण मूर्तियों के निर्माण से अपनी विशिष्ठ पहचान बनाई। धार्मिक मूर्तियों के साथ–साथ अपने अन्तर्मन के भावों को भी मूर्तरूप देने में आप अग्रणी रहे। 'मां और शिशु' की वात्सल्यमय मूर्ति इसका प्रमाण है। यह मूर्ति मां की ममता और बालक की चंचलता का अद्भूत प्रदर्शन करती है (चित्र सं. 1)। इस कृति को राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। 'शिव शक्ति' शीर्षक से बनाई मूर्ति में शिव का

चित्र संख्या 1मां व शिशु

चित्र संख्या 2 ऊषा रानी हूजा का एक शिल्प

अनोखा स्वरूप प्रदर्शित हुआ है। इस कृति में शारीरिक सौष्ठव, लावण्य एवं गति का सुन्दर समन्वय है। ''यह बोझ नहीं मेरा भाई है'' नामक कलाकृति दो भाईयों के प्रेम माधुर्य का सुन्दर प्रस्तुतिकरण है। इस मूर्ति में विद्यालय से घर लौटते दो भाइयों को बनाया गया है जिसमें बड़ा भाई अपने छोटे भाई को पीठ पर बैठाकर स्नेहपूर्वक ला रहा है।

यह कृति भी राजस्थान ललित कला अकादमी से पुरस्कृत हुई। ग्रामीण वृद्ध व्यक्ति की मूर्ति भी मानव शरीर की नश्वरता के प्रति सावचेती का उदाहरण है। इनके अलावा अनेक मूर्तियां संगरमरमर, बालुए पत्थर (सैण्ड स्टोन) मिट्टी पलास्टर आदि में आप द्वारा सृजित की गई। मूर्तिकला के जो संस्कार आपको विरासत में मिले उन्हें सहेजते हुए आपने अगली पीढ़ी को सौंपा है।

मूर्तिकला को बढ़ावा देने के निमित्त आपने 'सनातन धर्म मूर्ति आर्ट' संस्थान की स्थापना की।

कला सेवा के लिए राजस्थान ललित कला अकादमी ने आपको 'कलाविद्' की उपाधि से अलंकृत किया। 4 मार्च 1989 को आपने इस नश्वर संसार को हमेशा के लिए त्याग दिया लेकिन जीवन संध्या तक रची उनकी सृजना पीढ़ियों तक उनका स्मरण कराती रहेंगी।

ऊषा रानी हूजा– (1923–2016ई.)

18 मई 1923 को दिल्ली में जन्मी ऊषा रानी हूजा भारत की आधुनिक मूर्तिकला क्षेत्र का सुपरिचित नाम है। इन्होंने मूर्तिकला की विधिवत शिक्षा लंदन के रिजेन्ट स्ट्रीट पोलिटेक्नीक कॉलेज से ली। 1959ई. में इन्होंने जयपुर को अपनी कर्मस्थली बनाया। इन्होंने शुरू से ही कठोर व श्रमसाध्य मूर्तियां बनाने में रूचि ली। बड़े आकार की सीमेन्ट मूर्तियां इनकी पहचान है। लंदन में शिक्षा ग्रहण करने के समय इन पर यूरोपीय मूर्तिकारों का विशेषतः हेनरी मूर, एक्टिन मूलॉल आदि का प्रभाव पड़ा लेकिन वह अपनी कला की बुनियाद प्रेरणा मानवीय गतिविधियों को मानती थी। इनके विषय श्रमिक, खिलाड़ी, नृतक, कृषक आदि रहे हैं। इनके मूर्तिशिल्प भारत व भारत के बाहर अनेक महत्वपूर्ण स्थानों पर प्रदर्शित हैं। जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल, रवीन्द्र रंगमंच, दुर्लभ जी अस्पताल, शहीद स्मारक आदि स्थानों पर बने विशाल शिल्प इनकी कठोर कला साधना को दर्शाते हैं। इन्होंने धातु के अनुपयोगी टुकड़ों को सुन्दर मूर्तरूप देने का अभिनव प्रयोग किया। ऊषा रानी के शिल्पों में अनावश्यक अलंकरण नहीं है बल्कि सीधे–सीधे खुरदरी सतह के साथ विषय का रूपांकन किया गया है। रिसर्च स्कॉलर (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली), माइनर्स मॉन्यूमेन्ट (कोटा) श्रमिक (उदयपुर),

चित्र संख्या 3 बणी–ठणी

घूमर (जोधुपर) आदि उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ है(चित्र सं. 2)। समीक्षक हेमन्त शेष ने उनकी कला पर टिप्पणी करते हुए लिखा है ''इनके अधिकांश शिल्प जीवन की गति व लय की अभिव्यक्ति हैं।'' 22 मई 2016 को इनका निधन हो गया।

पद्मश्री अर्जुनलाल प्रजापति – (1957ई.)

राजस्थान की मूर्तिकला के क्षेत्र में पद्मश्री अर्जुन प्रजापति ने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। इनका जन्म 9 अप्रैल 1957 को हुआ। बाल्यकाल से ही कला के प्रति इनका रूझान था। गुंथी हुई मिट्टी को विविध आकार देकर इन्होंने अपने भीतर की कला को मूर्त रूप दिया। इनकी नैसर्गिक प्रतिभा को कलागुरू स्वर्गीय महेन्द्रदास, द्वारकाप्रसाद शर्मा और आनन्दी लाल वर्मा ने निखारा। स्वयं अर्जुन प्रजापति भी अपनी हर उपलब्धि को अपने कलागुरूओं का आशीर्वाद मानते हैं। इनका मानना है कि मूर्ति बनाना श्रमसाध्य कला है। यह कठोर तप है जो अन्ततः ईश्वर प्राप्ति का मार्ग है। अर्जुन प्रजापति की यह साधना इनके मूर्तिशिल्पों में प्रत्यक्ष अनुभव की जा सकती है। यथार्थ जीवन की कठिनाइयों के बीच अपने विषय तलाशना और उन्हें जीवन्त स्वरूप देना इनकी विशेषता है। इनके कुशल हाथों में पत्थर भी मोम की तरह मुलायम बन जाता है। इनकी बनाई बणी–ठणी की मूर्ति जगप्रसिद्ध है (चित्र सं 3)। संगमरमर के इस शिल्प में वस्त्रों की सिलवटें और घूंघट की पारदर्शीता दर्शनीय है। देश–विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों में इनकी मूर्तियां सज्जित हैं। राजस्थान ललित कला अकादमी से राज्य पुरस्कार, राष्ट्रीय कालीदास पुरस्कार, महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन अवार्ड, नेशनल अवार्ड सहित अनेक पुरस्कारों से आपको नवाजा गया है। भारत सरकार ने सन् 2010 में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया है। अर्जुन प्रजापति मूर्तिकला की नयी पौध तैयार करने के लिए भी सतत् प्रयासरत रहे हैं। इनका ''माटी मानस संस्थान'' स्थापित करना इस क्षेत्र की उल्लेखनीय पहल है। बणी–ठणी, गाय–बछड़ा, लेडी विद रोज़, राजस्थानी स्त्री, दुर्गा आदि इनके प्रसिद्ध मूर्तिशिल्प हैं।

राजस्थान की समकालीन मूर्तिकला –

चित्रकला की अपेक्षा मूर्तिकला में प्रयोगवाद का प्रवेश अपेक्षाकृत देर से व धीरे हुआ है। राजस्थान की मूर्तिकला मूलतः पारम्परिक व धार्मिक विषयों तक सीमित रही। धीरे–धीरे मूर्तिकारो ने यथार्थ आकारों के साथ विषयगत परिवर्तन किये। जीवन को केन्द्र मानकर मूर्तियों का सृजन किया। विविध माध्यमों का प्रयोग और विश्व कला के नवप्रभावों से राजस्थान में मूर्तिकला के नये दौर का आरंभ होता है। 1965 के बाद प्रयोगवाद ने गति पकड़ी। कलाकारों के विविध समूहों व कला संस्थानों ने वातावरण निर्माण में महत्ती भूमिका निभाई। राजेन्द्र मिश्रा, ज्ञानसिंह, नरेश भारद्वाज, हर्ष छाजेड़, पंकज गहलोत, अशोक गौड़ आदि मूर्तिकार 80 के दशक के बाद महत्वपूर्ण है। इनके काम में पारपंरिक के स्थान पर नवीन कला चेतना और अमूर्त अब्स्ट्रेक्ट आकार दिखाई देते हैं।

गणना की दृष्टि से राजस्थान के समकालीन मूर्तिकार कम हैं लेकिन मूर्ति जैसे श्रमसाध्य माध्यम के साथ काम करने वाले राजस्थानी कलाकारों की कला देश–विदेश के ख्यातनाम कलाकारों से किसी भी दृष्टि में कम नहीं है। ज्ञानसिंह के मूर्तिशिल्पों में संगमरमर पिघलते मोम की तरह दिखता है। वहीं पंकज गहलोत ने काले पत्थरों को अपने हाथों से तराश कर हीरे जैसा मूल्यवान बना दिया है। पंकज महानगर की चमक दमक से सुदूर प्रकृति के आंचल में अपने सृजन में आनंदित हैं इनकी मूर्तियों में प्रकृति और मानव का सुन्दर समन्वय है। (चित्र सं. 4)।

चित्र संख्या 4 युगल(पंकज गहलोत)

चित्र संख्या 5 अंकित पटेल का एक शिल्प

अंकित पटेल ने काष्ठ प्रतिमाओं से अपनी यात्रा शुरू की जिसे विशाल धातु के कायनैटिक स्कल्पचर बनाने की ऊंचाई तक ले आये हैं। जीवन के अनुभवों का सार इनके शिल्पों में दिखता है (चित्र सं. 5)।

मूर्तिकारों की इस पीढ़ी में भूपेश कावड़िया एक ऊर्जावान सृजक हैं जिनके काम में निरन्तरता दिखाई देती है। पत्थर और लकड़ी के कलात्मक संयोग से स्त्री देह के विविध आयामों को जीवन्त कर देने की क्षमता इनके काम में दिखती है

चित्र संख्या 6 भूपेश कावड़िया का एक शिल्प

(चित्र सं. 6)। अशोक गौड़ के शिल्पों में गति और ठहराव का सामंजस्य दिखता है। राजस्थान की समकालीन मूर्तिकला में अनेक युवा चेहरें है जो अपने अंतस के कलाकार की छटपटाहट को पत्थर, लकड़ी धातु, फाईबर जैसे माध्यमों से प्रकट करना चाहते हैं।

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट और अन्य कला संस्थानों के मूर्तिकला विभाग इन युवाओं को प्रशिक्षण और प्रेरणा देकर उनके संवेदनशील कलाकार को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बनाने में महत्ती भूमिका निभा रहे हैं।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. राजस्थान की मूर्तिकला 1960–65 के बाद प्रयोगवाद की ओर अग्रसर हुई।
2. मालीराम शर्मा और टी.पी. मित्रा ने राजस्थान में मूर्तिकला के लिये नवीन वातावरण का सृजन किया।
3. मालीराम शर्मा को राजस्थान का माईकल एंजिलो कहा जाता है।
4. महेन्द्र कुमार दास व्यक्ति मूर्तन के लिये प्रसिद्ध थे।
5. कलाविद् गोपीचंद मिश्रा ने अनेक पारम्परिक व यथार्थ परक मूर्तियां बनाई।
6. ऊषा रानी हूजा राजस्थान की प्रसिद्ध महिला मूर्तिकार थी।

7. अर्जुन लाल प्रजापति ने राजस्थान की मूर्तिकला को नई पहचान दी।

8. राजस्थान के युवा मूर्तिकारों में समकालीन भारतीय कला जगत में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है।

अभ्यास प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्र 1 कायनेटिक स्कल्पचर के लिये किसे जाना जाता है ?

प्र 2 किसके मूर्तिशिल्पों में संगमरमर मोम की तरह दिखता है?

प्र 3 रिसर्च स्कॉलर किसका मूर्तिशिल्प है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्र 1 ''बोझ नहीं मेरा भाई है'' किसकी कृति है?

प्र 2 राजस्थान का माईकल एंजिलो किसे कहते है?

प्र 3 राजस्थान से किस मूर्तिकार को पदम्श्री से विभूषित किया गया है?

प्र 4 संगमरमरर की पारम्परिक मूर्तियों के लिए कौनसा शहर प्रसिद्ध है ?

निबन्धात्मक प्रश्न

प्र 1 राजस्थान की समकालीन मूर्तिकला पर लेख लिखिए ।

प्र 2 उषा रानी हूजा के कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए ।

प्र 3 राजस्थान की आधुनिक मूर्तिकला की विकास यात्रा समझाइये ।